Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-III, February 2011

गौ-संवर्धन में गोशाला प्रबन्धन

श्री उंबरकर राजेश गंगाधरराव:नांदेड(महाराष्ट्र)

वेदों में गो के विषय में गो के सामाजिक, आर्थिक सम्पन्नत, सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि विषयों के साथ गोपालन विषय पर भी अनेक स्थलों पर मार्गदर्शन प्राप्त होता है। यदि ऐसा कहें कि वैदिक जीवन की रूपरेखा गो-यज्ञ-योग की त्रिमूर्ति पर आधारित है, किसी भी ज्ञान और कौशल्य को व्यवहार में लाने के लिए व्यवस्था बनानी होती है। आधुनिक भाषा में मॅनेजमेंट इसी को कहते है। गोवंश के संरक्षण के लिए गौशाला एक उपयुक्त स्थान है। १) भारतीय गाय तथा संतती का संरक्षण तथा लोगों को शुद्ध दूध तथा दुग्ध कि पर्याप्त आपूर्ति करने के लिए उनका प्रजनन और उन्नयन तथा ग्रामिणों को सर्वोत्कृष्ट बछियॉ का विवरण करना। २) प्रजनन के लिए ग्रामीणों को आपूर्ति करने के लिए सर्वोत्कृष्ट नस्ल के भारतीय सांडों को तैयार करना तथा ग्रामीण गायों का संवर्धन करना ३) भारवाही कार्य के लिए सर्वोत्तम स्वस्थ बैलों का उत्पादन तथा कृषकों को वितरण के लिए बछडों का संरक्षण; यही गोशालाओं के त्रिसूत्रीय लक्ष्य हैं। और इस लक्ष्य को प्राप्य करने के लिए गोशाला प्रबन्धन जरुरी है।

प्रस्तावना :

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां अधिकतर लोग कृषि कार्य करके अपनी जीविका प्राप्त करते है। देश के अधिकतर भागों में कृषि के कार्यों में बैलों की मुख्य भूमिका होती है। देश में गोधन प्राचीन काल से ही किसानों कि आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। गाय के गोमय से भूमि की उर्वरा शक्ति बढती है। भारत में इस समय लगभग १८.५ करोड गोवंश हैं जिसमें से लगभग १६.५ करोड देशी पशु है (सन २००३)। इस देश मे ंगाय की लगभग ३० नस्लें है। जिनको मुख्यत: दूध देनेवाली, कार्य करने वाली और दोनों उपयोगों आनेवाली में विभाजित किया गया है। भारत में कुछ गौशालायें गोवंशीय नस्लों के संरक्षण, टिकाऊ और इनके पूर्ण उपयोग में महत्त्वपूर्ण भुमिका निभा रही हैं। कुछ गोशालायें अपने यहां नस्ल सुधार कार्यक्रम चला रही है। ऐसी गोशालाओं को थोडे प्रयत्न से संरक्षण केंद्र बनाकर इनका प्रयोग गोवंशीय पशुओं के संरक्षण एवं सुधार कार्यक्रम के लिये किया जा सकता है।

देश में सर्वप्रथम १८७८ में स्वामी दयानन्दजी ने हरियाणा के रेवाडी जिले में एक गोशाला कि स्थापना की थी। उस समय गोशालाओं का मुख्य उद्देश्य जीव दया ही था। लोग इनमें गाय की सेवा करने जाते थे, दान में भूमि और पैसा भी देते थे। भारत सरकार ने प्रथम पंचवर्षीय योजना में गो

ISSN 0976-9714

www.ghrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-III, February 2011

सदन बनाने कि आवश्यकता पर बल दिया था। १९४७ में सरदार तारा सिंह की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई, जिसमें अब परिस्थितियाँ बदल गई है, कुछ लोगों ने तो गोशालाओं की भूमि जो चरने के उपयोग में आती थी, उसपर ही कब्जा कर लिया है। आज सभी गोशालाएं सेवादारों तथा पैसे की कमी से जूझ रही है। गोशालाओं में चारा-दाना खरीदने के लिये पैसे की कमी है। अच्छे सांडो की कमी, तकनीकि ज्ञान की कमी, गोशालाओं के आपसी तालमेल का न होना इत्यादि समस्या है। आज देश में ४००० गोसालायें है जिनमें लगभग १० लाख गोवंश पशु है। इनमें से बहुत सी गोशालाएं नस्ल सुधार एवं आत्मनिर्भरता के लिए कार्यक्रम चला रही है।

गौशाला में गायों को रखने की व्यवस्था कैसी हो, उनके स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रखा जाये, चारा-दाने की व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, गौशाला स्वावलंबी कैसे बने, गौशाला का आकार कितना हो इत्यादि कार्यक्रम गोशला प्रबंधन में आती है।

गौशाला के उद्देश्य:

१) गौ-संवर्धन एवं संरक्षण
२) गायों कि देशी एवं उन्नत नस्ल का विकास
३) स्वरोजगार को बढावा
४) जैविक खेती का प्रचार एवं प्रशिक्षण
५) पर्यावरण संरक्षण
६) परम्परागत जीविका संरक्षण एवं संवर्धन

गौशाला के कार्यक्रम (स्वावलंबन हेतु) :

१) दुग्ध उत्पादन एवं विक्रय
२) बायोगैस संयत्र से विद्युत उत्पादन एवं स्लरी से वर्मी काम्पोस्ट का निर्माण एवं विक्रय
३) गो-मूत्र से फसल रक्षण का निर्माण एवं विक्रय
४) औषधि हेतु गौमूत्र का संकलन एवं विक्रय
५) जैविक कृषि एवं गोपालन प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन
६) जैविक उत्पाद का विक्रय

गौशाला का आकार :

प्राय: यह देखा गया है कि गौशाला में कम स्थान पर अधिक गौवंश रख दिये जाते है। गौशलाा प्रबन्धकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि गौशाला में अधिक भीडभाड न हों। क्योंकि इसमे

www.gnrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-III, February 2011

बीमारी फैलने कि आशंका बनी रहती है एवं गौवंश पर्याप्त मात्रा में चारा-दाना भी नही खा पाते है। सामान्यत: ३.५ वर्ग मी. स्थान एक वयस्क गाय के लिए पर्याप्त है। जब कि सांड को १२ मी. की आवश्यकता होती है ओसर को २.० वर्ग मी. व बछडे / बछडियों १.० वर्ग मी स्थान उपलब्ध कराना चाहिए, इसके अतिरिक्त लगभग दुगुना खुला स्थान रखना चाहिए ताकि उसमें गौवंश विचरण कर सकें।सामान्यत: एक स्वस्थ व पूरे विकसित शरीर वाली गाय के लिए ४० वर्गफुट (8' X 5') स्थान की आवश्यकता होती है।

गौशाला का तापमान :

गोशाल की छत सामान्यत: एसबेस्टम सीट खपरैल अथवा जैसी ही सुविधा हो उसी में झोपडीनुमा बनाई जानी चाहिए। सर्दी व गर्मी से गायों के बचाव व उनके आराम कि दृष्टि से टीन की छत आवास के लिए उतनी उपयुक्त नही होतीं। छत की साइड की उॅचाई १० से १२ फुट तथा सेन्टर की उॅचाई १६ से १८ फुट होनी चाहिए। ऐसी गोशालाएॅ गमी मे भी ठंडी रहती है। सामान्यत: ४५-५० डिग्री फारेनहाइट तापमान में गाय को अच्छे ढंग से रहने के लिए ठीक रहता है। देशी गाय इससे अधिक तापमान भी सह लेती है। गौशाला में ३४५२ घन फुट वायु प्रवाह प्रति घंटा रहना चाहिए। जिसमें कार्बन डाइऑक्साईड ५.८ घन फुट से अधिक न हो। प्रबंधक को ध्यान में रखना चाहिए की गोबर व मूत्र की सफाई समय-समय पर होती रहे जिससे वातावरण में खराब गैस एकत्रित न रहने पाये व गायों को स्वच्छ हवा मिलती रहे।

गौशालाओं में प्रकाश व्यवस्था:

प्रकाश की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि प्रत्येक गाय को प्रकाश मिले। गोशाला में छाया और प्रकाश बराबर ही रहना चाहिए। पर्याप्त प्रकाश के अभाव में कई बार गाय चारा-दाना भी ठीक से नहीं खा पाती, इसके अलावा नीचे दिये गये बातों की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

- गोमूत्र इकठ्ठा करने के लिए गोशाला के बाहर या अपने सुविधानुसार पक्के गड्ढे बनवा लेना चाहिए।
- गोशाला के बाहर पर्याप्त मात्रा में वृक्षारोपण करने चाहिए ताकि गर्मी के मौसम में उन्हें ठंडे स्थान पर रख सकें।
- सांड का गृह का निर्माण करना चाहिए। सांड को गायों के साथ नहीं रखना चाहिए। क्योंकि उनके साथ रहने से सांड उत्तेजित होते हैं। और प्रजनन क्षमता खो देते हैं। इसीलिए उनका अलग गृह होना चाहिए।

ISSN 0976-9714

www.gnrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-III, February 2011

- सांडों को दिन में १-२ घंटे के लिए गायों के बीच छोडा जा सकता है। जिससे गर्भधान योग्य गायों का पता लग सके।
- गायों का दूध दोहन के लिए अलग से स्वच्छ स्थान बनाया जाना चाहिए। इससे दोहन कर्ता की सुविधा, सुरक्षा, दूध की गुणवत्ता बढ जाती है।
- गोशाला में कार्यरत व्यक्तियों को आवास की व्यवस्था हो।
- अस्वस्थ पशु के लिए अलग कक्ष की व्यवस्था हो।
- चारा काटने का शैड अलग हो तथा राशन एवं चारा गोदाम की व्यवस्था के लिए सुरक्षित जगह हो।
- गोशला के काम सुचारू ढंग से चलने के लिए एक कार्यालय कक्ष हो।

दसप प्रणाली:

गौशालाओं के प्रबन्धक को अच्छी जानकारी होने के बावजूद कुछ गिनी चुनी गौशलाएं ही गोवंश का संवर्धन कर पा रही है। अधिकतर गौशालाओं में मिश्रित प्रजातियों का गोवंश देखा गया है। जिससे गाय के संवर्धन की अपेक्षा करना मुश्किल है। मिश्रित गोवंश से आनेवाली संताने भी शुद्ध नस्ल की नहीं होंगी। इस स्थिती को बदलना बेहद आवश्यक है। एक आसान सी पद्धती बनाई जा रही है। जिसमें हर गोशाला में पचास गायें ही पाली की जा सकती है। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि देश कि आधी गौशालाएं गोवंश के संवर्धन के लिए पूरी तरह से सक्षम है। दसप प्रणाली कें अंतर्गत अपनी गोशाला में से दस प्रतिशत सबसे अच्छी गाय एक अलग बाडें में रखी जाये और इनका प्रजनन भी अच्छे सांड द्वारा करवाया जाए। साल में दो बार दसप बाडे में से १० प्रतिशत निम्न कोटि की गाये वापस गोशलाा में रखी जायेगी। और उतनी ही चुनिंदा गायें गोशलाा से दसप बाडे में रखी जाएगी। दसप बाडे में पैदा होने वाले बछडे एवं बछियां बडे होने पर गौशाला के निकटवर्ती गांव में और दूसरी गोशाला गोवंश में संवर्धन के लिए उपयोग की जानी चाहिए।

गोशालाओं को संरक्षण केंद्र बनाने हेतु आवश्यक बातें:

१) नस्ल सुधार कार्यक्रम गोशालाओं में चलायें जाने चाहिए।
२) गोशाला में हर पशु का इतिहास रखना चाहिए।
३) खेती कार्य बैलों से करने के लिए किसानों को प्रेरित किया जाना चाहिए।
४) रासायनिक खादों कि अपेक्षा गाय के गोबर व मूत्र का प्रयोग करके जैविक कृषि को बढावा देना चाहिए।

ISSN 0976-9714

www.gnws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-III, February 2011

५) गोशलाओं में जो देशी दवाईयां उपयोग में आती है उनपर पूरी जानकारी एकत्र कर उनका विस्तार करना चाहिए।

६) गोशालाओं में पशुओं के खान-पान व प्रबंध में आधुनिक तकनीकि को अपनाना चाहिए।

७) गोशालाओं को अच्छे बैल, सांड,एवं गाय पैदा करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

८) गोशालाओं मे सफाई व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए।

९) प्रत्येक जिला स्तर पर एक गोशाला को आदर्श गोशाला बनाया जाए।

१०) गोशालाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिए। इसके लिए पंचगव्य से विविध उत्पाद बनाने चाहिए।

११) देश में बढती हुई उर्जा की मांग को पूरा करने के लिये बायोगैस का उत्पादन किया जाए।

१२) जैविक कृषि को प्राथमिकता दी जाये।

सारांश :

गोशालाओं में एक बहुत बडी गोवंश संपदा है। इनका समुचित प्रयोग करके हम गोवंश का संरक्षण और सुधार कर सकते है। कुटीर उत्पादों के रूप में गोवंश को ग्रामोद्योग का आधार बनाया जा सकता है। गो आधारित कृषि, स्वास्थ्य, उर्जा, ग्रामोद्योग, अपना कर समस्या का समाधान कर सकते हैं।

गोशलाा का प्रबन्धन किया जाए तो गायों में भी बिमारीयॉ कम होंगी। उत्पादन अधिक होगा। गोशलाएं भी लाभ में रहेंगी। संतती कि अनुवांशिक क्षमता के आधार पर उच्च गुणवत्ता वाले सांडो का गौ संवर्धन के लिए चयन करेंगे, तभी गायें आर्थिक रूप से गोपालों और किसान के लिए लाभकारी होगी।

संदर्भ :

१) पुंडीर रा.कु., राष्ट्रीय पशु अनुवांशिक संसाधन ब्युरो, करनाल (हरीयाणा) The Indian Cow The Scientific and Eco Journal (July/Sept.2007) P.26

२) चौहान रामस्वरूपसिंह, भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर (यू.पी.) The Indian Cow The Scientific and Eco Journal (Oct./Dec. 2004)

३) शर्मा सुनील भू.पू. सदस्य., म.प्र. गौसेवा आयोग भोपाल The Indian Cow The Scientific and Eco Journal (July/Sept.2005)

www.gnrws.in